2–8–67 ओमशांति रात्रीक्लास

बच्चे बाप को ज्ञान का सागर कहते हैं। इसको ही रचता फादर कहा जाता है। साधु–संत आदि भी कहते हैं कि रचता और उसकी रचना आदि को हम नहीं जानते हैं। वो जानते हैं। बाप भी कहते हैं कि हम जानते हैं तुम नहीं जानते हो। 84जन्मों के लिए भी बाप कहते हैं कि हम जानते हैं तुम नहीं जानते हो। अब यह सभी बातें 84जन्मों की हैं। रचना की आदि,मध्य,अंत का राज रचता बाप ही समझाते हैं। रचता है तो जरूर फिर विनाश भी कराते हैं। सिर्फ क्रियेटर कहना तो माना कि प्रलय हो फिर नई दुनियां रचते हैं। बच्चे जानते हैं कि बरोबर बाप आकर नई दुनियां स्थापन करते हैं। बाबा–बाबा कहते रहना चाहिए। लौकिक बाप तो नहीं कहेंगे ना कि मामेकम् याद करो। एक ही पारलौकिक बाप है जो कहते हैं कि मामेकम् याद करो। बेहद के ढेर बच्चे हैं। बहुत होते जावेंगे। यह मकान तो बहुत बड़ा बनाना पड़ेगा। यह पूरा ठिकाना है वानप्रस्थ अवस्था वालों का। यह है बेहद की वानप्रस्थ अवस्था का आश्रम। मनुष्य...तो एक भी नहीं है जो कि बाप को जाने वा यथार्थ रीति याद कर सके। ईश्वर का स्मरण करते हैं ;परंतु फल कुछ भी नहीं मिलता है ;क्योंकि जानते नहीं हैं। शिव के मंदिर में जाकर काशी कलवट खाते हैं ;परंतु ऐसे नहीं कि वो शिवपुरी में पहुंच सकते हैं। इनकारपोरियल वर्ल्ड को शिवपुरी कहा जाता है। तुम जानते हो कि अब यह नाटक पूरा होता है। हम जानते हैं कि शांतिधाम फिर यहां आवेगा। सतोप्रधान दुनियां वा स्वर्ग बन जावेगा। .... फिर हम यहां पर आवेंगे। दिलवाला मंदिर देखेंगे तो समझेंगे कि वास्तव में यह तो हमारा ही यादगार है। शक्ल तो तुम्हारी थोड़े ही होगी। तुम्हारा शरीर तो यही पर ही खलास हो जावेगा। बच्चों की यह नालेज बाप बिना कोई दे.....रिफ्रेश होने के लिए बाप पास आते हैं। बेहद का बाप है तो दादा भी बेहद का ही हो जाता है। सारी दुनियां के जो भी मनुष्य मात्र हैं उनका रचता प्रजापिता ब्रह्मा ही गाया जाता है। यह चोटी भी नहीं है। तो बाबा नई सृष्टि रच रहे हैं ना। यह है मुखवंशावली। नई दुनियां तो शुरू ही होती है मुखवंशावली से। इस समय तुमको एडॉप्ट किया जाता है। इसलिए तुम हो मुखवंशावली। एडॉप्ट कोई से तो करते ही होंगे ना। शूद्र को एडॉप्ट कर ब्राह्मण बनाते हैं। मनुष्य से देवता किये.....गाते हैं ना। ऐसे तो कहीं भी नहीं है कि असुरों और देवताओं की युद्ध होगी। बाप समझाते हैं कि वो है शूद्र सम्प्रदाय। असुर कहा जाता है रावण सम्प्रदाय वालों को। तुम तो डायरैक्ट ईश्वर के हो गये हो ना। तुम जानते हो कि प्रजापिता ब्रह्मा कैसे एडाप्ट करते हैं। कन्या को एडॉप्ट करते हैं तो कहते हैं न कि यह हमारी स्त्री है। सतयुग में भी ऐसे ही होगा। स्त्री को एडॉप्ट किया जाता है ना। इस समय तो बच्चे हैं कुखवंशावली। एक बाप प्रवेश कर मुखवंशावली बनाते हैं। कहते हैं ना कि ईश्वर का अंत कोई नहीं पाते हैं। ईश्वर को कोई जान नहीं सकते हैं। ना ईश्वर को, ना ही अपनी आत्मा को ही जानते हैं। बाप ही आकर समझाते हैं। नाम–रूप से न्यारी तो कोई बात होती ही नहीं है। बाप सभी बातें समझाते हैं। मनुष्य से डॉक्टर ,सर्जन,बैरिस्टर वगैरह बनते हैं ना। यहां तो फिर तुमको बाप देवता बनाते हैं। तुमको देवता नहीं पढ़ाते हैं। यह है अलौकिक पढ़ाई ,जो कि शिवबाबा पढ़ाते हैं और तुम बच्चे पढ़ते हो। यहां पर तो देवता है ही नहीं जो कि मनुष्य को पढ़ाकर देवता बनावे। बाप तुमको एडॉप्ट कर फिर पढ़ाते हैं। भक्तिमार्ग की तो है ही पुरानी कहानियां। देवतायें भी होकर गए हैं। क्राइस्ट भी तो क्रिश्चियन्स का होकर गया है ना। तुम जानते हो कि यह सब होकर गए हैं। उनकी ही कहानियां सब पीछे बैठ बनाते हैं। सत–त्रेता में क्या हुआ है वो दुनियां नहीं जानती है। अब तो मूलवतन को भी तुम्हीं ने जाना है। वहां पर हम आत्माएं रहती हैं। यह बातें जो अच्छे2 समझे हैं वो ही समझते हैं। बूढ़े2 इतना नहीं समझ सकते हैं। सुनेंगे तो फिर भूल जावेंगे ;

क्योंकि देखा जाता है कि तकदीर में इतना नहीं है। बच्चे अटेंशन नहीं देते हैं वा तकदीर में नहीं है तो तदबीर क्या करेगी। तदबीर और तकदीर। तकदीर में ही नहीं है तो बाबा क्या कर सकते हैं। बच्चों की बुद्धि में है कि बेहद का बाप हम बच्चों को बैठ कर पढ़ाते हैं। तो बेहद की राजाई स्थापन हो जाती है। फिर भक्तिमार्ग में उंच कर्म करने से भी हद की राजाई मिल जाती है। 50/60गांव होंगे। मगर तुम तो विश्व का ही मालिक बनते हो। यह बुद्धि में लाना चाहिए। परमपिता परमात्मा ने विश्व विश्वनाथ को विश्व की बादशाही का वर्सा दिया है। भारत सतयुग था ना। देवी देवताओं का राज्य था। और कोई भी नहीं था। ना ही कोई बौद्धी खंड ,चीनी खंड था। तुम जानते हो कि स्वर्ग में यहां का पता नहीं रहेगा। सूर्यवंशी थे तो चंद्रवंशी नहीं थे। फिर चंद्रवंशी तो वैश्यवंशी नहीं थे। मुख्य तो है देवता धर्म। बाकी दूसरे धर्म तो हैं ही बायप्लाट्स। यह वैरायटी धर्मों का वैरायटी फीचर्स का झाड़ है। विराट रूप तुम्हारे लिए है। 84जन्मों में इन वार्णों में आते हैं। इस समय तो मनुष्य नई दुनियां का नाम सुनकर (अजब)खाते हैं। जिनकी बुद्धि में बैठता है,जिनको अच्छा लगता है उनकी बुद्धि में जम जाता है। कलम कैसे लगती है वो वंडर है ना। इन देवी देवता धर्मों का कलम लग रहा है। पहले2 तो शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं। तो कलम लग जाता है। ढेर की ढेर प्रजा होती है। वृद्धि को पाते हैं ना। राजाओं की भी वृद्धि ,प्रजा की भी वृद्धि होती जावेगी। कितने ही आकर सीखेंगे। अभी तो बहुत ही थोड़े हैं। 10प्रतिशत भी नहीं है। 2 से 4,फिर 4से 8 ऐसे2 झाड़ बढ़ता है। इसमें फिर तूफान लगने पर छनते भी हैं,गिरते भी हैं। बाप कहते हैं कि अंत में कोई भी याद नहीं आना चाहिए। आत्मा को सतोप्रधान बनना ही है। इसके लिए ही यह योगाग्नि है। तुम बच्चे समझते हो कि हम बाप को याद करने से सतोप्रधान बन जावेंगे। मूल बात तो है याद की यात्रा। भक्तिमार्ग की परिक्रमायें आदि तो अब आपसे छूटी। अब सिर्फ शांत में रहना है। बाप को याद करो और 84के चक्र को याद करो। मुख से भी बोलो नहीं। बच्चे,अब मूलवतन को भी जानते हैं,जहां पर बाप रहते हैं वहां पर ही हम भी रहते हैं। बाकी सृष्टि का चक्र तो यहां ही समझना होता है। दुनियां में तो मनुष्य कुछ भी नहीं जानते हैं। सर्विस लिए तो बाबा कहते रहते हैं कि अच्छे2 चित्र बनाओ। तैयारी करो। बाकी फंड आदि इकट्ठा नहीं करना है। सांवलशाह की हुंडी भरनी ही है। ड्रामा में तो पहले ही से नूंध है। समय पर सभी कुछ आ जावेगा। इसमें तुम बेफिक्र रहो। तुम काम करेंगे तो वो भी ड्रामा अनुसार पहले ही से नूंध है। बाप खातिरी देते हैं तो बाबा थोड़े ही डरेंगे। दूल्हालाल का कुआं भरा हुआ है। याद के चार्ट से बच्चों की अवस्था का पता पड़ जाता है। याद में ही ना रहने से पाप भी हो जाते हैं। बड़ी उंची मंज़िल है। इसलिए बाबा कहते हैं कि शाम को रोजाना पोतामेल निकालो। घाटा अथवा फायदा तो होता ही है ना। सयाणे बच्चे तो रोजाना अपना पोतामेल देखेंगे कि आज हमने कितनी कमाई की है। आज तो फायदा बहुत हुआ। आज कम हुआ। देहअभिमान कारण अपना बहुत नुकसान कर लेते हैं। शिवबाबा के तो दिल ही से हट जाते हैं। फिर तो उनका बोल–चाल भी शैतानी हो जाता है। बाप आकर देहीअभिमानी बनाते हैं। बाबा हमेशा समझाते हैं कि यहां पर जिनको भी ले आओ तो ठोक2 कर लेकर आओ। बच्चे को ले आते हैं तो ले आने वाले पर भी दण्ड पड़ता है। बहुत नुकसान हो जाता है। बाबा का बनकर अपने से कोई भूल करते हैं तो अपना बहुत ही सत्यानाश कर लेते हैं। 5मंजिलों पर से धक्का खाने पर हड्डी–गोडे आदि सब टूट जाते हैं। माया तो ऐसी प्रबल है कि जो नाक से पकड़कर भी गटर में डाल देती है। बच्चे राय देते हैं। भगवान भला किसी से क्या राय लेंगे?वो तो राय देने आये हैं ना। अंदर में हंसते भी हैं। मैं तो सबसे ही अच्छी राय निकालूंगा। और फिर करता भी तो मैं ही। करना तो बाबा को ही पड़ता है ना। बाबा राय देते हैं तो चित्र बनाते हो। किसी को दोगे तो वो बहुत खुश होंगे ;परंतु माया रूपी कीड़े भी आ लगते हैं ना। गुडनाइट।